संवाद

बवाना कल और आज

कैलाश भट्ट

मेरा नाम कैलाश भट्ट है। मैं बवाना जेजे कॉलोनी में रहता हूं। इससे पहले मैं यमुना पुश्ता में रहता था, जहां की बस्तियां सन् 2005 में बवाना जे जे कालोनी में बसाई गई हैं।

बवाना आकर मैंने देखा कि यहां लोगों की स्थिति बहुत दयनीय थी। मूल सुविधाओं के नाम पर सिर्फ़ पक्की सड़क और बड़ी नालियां बनी हुई थीं। पानी के लिए तीन-चार टोंटियां वाला एक स्टैण्ड था जो प्रत्येक ब्लॉक के एक किनारे पर लगा हुआ था। प्रत्येक टोंटी स्टैण्ड के पास एक बोर्ड था जिसमें पानी आने का समय दिया हुआ था। लेकिन पानी की सप्लाई शुरू नहीं हुई थी। जहां प्लॉट थे वह जगह सड़क से 6-7 फुट नीचे थी। ज़मीन में कांटेदार झाड़ियां, खती के बाद की लम्बी-लम्बी नुकीली घास-फूस और गड्ढे थे। सड़कों पर लगी स्ट्रीट लाईट रात के समय जलती नहीं थी। शौचालय बने हुए थे लेकिन बिजली और पानी न होने के कारण अभी बन्द थे। लोगों को पीने के लिए पानी मंदिर पर लगे नल से भरकर लाना पड़ता था। सभी लोग शौच के लिए खुले में ही जाते थे।

2006 में बिजली के खम्बे और कनेक्शन नहीं थे, धीरे-धीरे लोगों ने चोरी की बत्ती जलानी शुरू की। अब पानी आना शुरू हो गया था, पानी का पम्प जेनरेटर/ डीज़ल द्वारा चलाया जाता था। तीन समय पानी आने तो लगा लेकिन पानी के स्रोत बहुत कम होने के कारण लम्बी-लम्बी लाईनें लगानी पड़ती थीं। पानी भरने का काम अधिकतर महिलाएं ही करती थीं। आने वाले पानी का स्वाद अच्छा नहीं था। कुछ लोग मंदिर से पानी लाकर पीते और खाना पकाते थे और आने वाले पानी का इस्तेमाल बाकी अन्य कामों में करते थे। कुछ महिलाएं नहाने और कपड़े धोने के लिए नहर पर जाती थीं, जहां पर छेड़छाड़ की घटनाएं बहुत होती थी। शौचालय भी चालू हो चुके थे लेकिन सुबह के समय शौचालय के प्रयोग के लिए बहुत लम्बी-लम्बी लाईनों से गुज़रना पड़ता है।

ए ब्लॉक के समीप एक स्लम ऑफिस था, जिसे लोग लाल घर के नाम से पुकारते थे। वहां रात को जेनरेटर की मदद से स्ट्रीट लाईट जलने लगी थी। अधिकतर सभी लोग बाहर सड़क पर चारपाई लगाकर सोते थे और गर्मी के मौसम में भी सकून का अहसास करते थे।

बवाना जेजे कॉलोनी में कोई मार्किट न होने के कारण लोगों को बवाना मार्किट से समान खरीदने जाना पड़ता था। समीप में स्कूल न होने और बवाना में छेड़छाड़ और भेदभाव की घटना बढ़ने के कारण लड़कों और लड़कियों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक समय ऐसा भी था जब मुझे भी आगे पढ़ने के लिए सोचना पड़ा, पर हम चार दोस्तों ने जो पहले एक ही जगह में पढ़ते थे (पुनर्वास के पहले) दिल्ली गेट, दोबारा स्कूल में जाना शुरू किया। मैं सुबह पांच बजे उठता और शाम को चार बजे घर आता था। शुरू के दिनों में तो बहुत

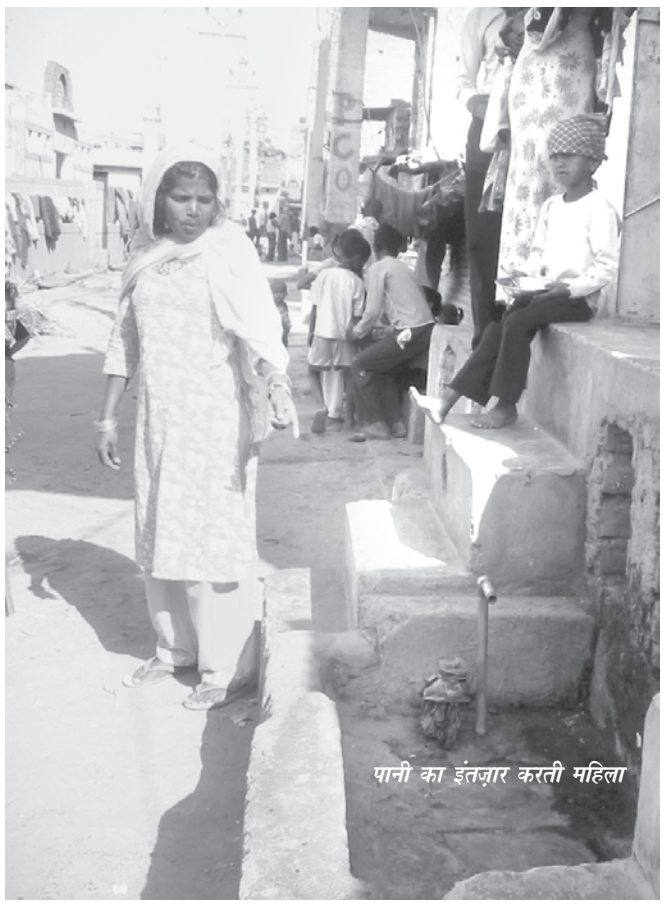

पानी का इंतज़ार करती महिला

मज़ा आता था लेकिन धीरे-धीरे मुझे परेशानी होने लगी। मैं बहुत थक जाता था। स्कूल जाने के लिए हमें सुबह तड़के बस पकड़नी पड़ती थी। स्कूल जाते व आते समय बहुत डर लगता था क्योंकि गांव के लोग हमारे साथ बहुत बुरा व्यवहार करते थे। बस की सीट पर बैठने नहीं देते, सीट से उठा देते, गाली देते और बेवजह मारते थे। मैं और मेरे दोस्त जब भी स्कूल से आते -जाते थे, हमें अपनी पहचान छुपानी पड़ती थी। जब कोई हमसे पूछता था कि कहां रहते हो तो हम उन्हें किसी गांव का नाम बता देते थे।

धीरे-धीरे स्थिति में सुधार आने लगा। वर्ष 2007 में बवाना के स्कूल में लड़कियों/लड़कों का दाखिला शुरू हो गया, कॉलोनी से ही बसें चलनी शुरू हो गई, भेदभाव होता है लेकिन इतने खुले पैमाने में नहीं, गलियों में नालियां व खडंचे डालने का काम शुरू हो गया।

सुविधाएं मिलीं तो उन्हीं सुविधाओं ने समस्याओं को जन्म दिया। गलियों में नालियां जल्दबाज़ी से डाली गई। इन नालियों की बनावट सही न होने के कारण नाली का पानी गटर में जाने की वजह वापस आने लगा। नाली अपनी जगह से हट गई। इससे लोगों ने अपने-अपने घरों के आगे ईंट और मिट्टी लगा ली। अब स्थिति ऐसी है कि लोग न नालियां खुलने देते हैं और न ही खोलते हैं। पानी के हैंडपम्प सूख गये। महिलाएं अब भी कपड़े धोने और नहाने के लिए नहर पर जाती हैं।

इन्हीं दिनों बवाना में लगातार आगजनी की घटनाएं बहुत हो रही थीं। हर दो-तीन महीने में आग लग जाती थी। लगभग 200 से 250 झुग्गियां आग की चपेट में आ गई। दहशत का समय वर्ष 2008 तक चलता रहा। 2009 तक लगभग 90 प्रतिशत घर पक्के बन चुके थे।

अब एन डी पी एल द्वारा बिजली का कनेक्शन लगने से, स्लम विभाग (लाल घर) और शौचालय के जेनरेटर बन्द हो गये हैं। वर्ष 2009 में पानी के स्रोत कम और जनसंख्या की वृद्धि होने और पानी का प्रेशर कम होने के कारण पानी की समस्या बढ़ गई है। पानी की समस्या को लेकर लोग एम एल ए के पास गए। एम एल ए ने प्रत्येक ब्लॉक में लगभग 20-20 टोंटियां लगवा दीं। इसके बाद लोगों ने इसे देख स्वयं ही टोंटियां लगानी शुरू कर दीं। अब पानी के स्रोत तो बढ़ गए लेकिन इतनी सारी टोंटियां

गंदगी का अंबार

होने से पानी का प्रेशर धीरे-धीरे और भी कम हो गया। कुछ लोगों ने अपने घर में इसी पाईप लाईन में मोटर लगा दी। अब ज़्यादा पानी उन लोगों तक पहुंचने लगा जिनके घरों में मोटर लगी थी।

केवल 25 से 30 सफ़ाई कर्मचारियों को पूरे जे जे कॉलोनी साफ़ करने का काम सौंपा गया है। एम सी डी ने अपनी ज़िम्मेदारी दिखावे के रूप में पूरी ली है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए इतने कम सफ़ाई कर्मचारी होने से कोई फायदा नहीं होता।

आज बहुत कुछ बदला है। कुछ समस्याएं कम हुई तो कुछ नई सामने आई हैं। पुनर्वास के नाम पर हम पर सरकार की मार आज तक झेल रहे हैं। बीमारियां बढ़ीं तो अस्पताल की दूरी और साधन कम होने से इलाज मुश्किल हो गया। सरकारी नक्शे में बवाना पुनर्वास क्षेत्र में एक स्वास्थ्य केन्द्र की जगह दी है लेकिन आज उन जगह पर नाली का पानी आने से मच्छर और कई तरह की जानलेवा बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। लोगों के पास दो वक्त के खाने हेतु पैसे कमाने के लिए समय पूरा नहीं पड़ता, इन समस्या पर आवाज़ कैसे उठायें। एक उम्मीद थी युवा पीड़ी से। लेकिन नशे ने इस पर पहले से अपना साम्राज्य फैला लिया है। पुलिस की लापरवाई और भ्रष्टाचार ने आज जे जे कॉलोनी को काले धन्धों का घर बनने की पूरी इजाज़त दे दी है। लेकिन मुझे अभी भी उम्मीद है बदलाव आने की और यह बदलाव भी हम युवाओं को ही लाना पड़ेगा।

कैलाश भट्ट *जेजे कॉलोनी में रहते हैं।*